Q→ स्पिनोजा की ज्ञानमीमांसा की व्याख्या करें?

Ans→ स्पिनोजा की ज्ञानमीमांसा उसके तत्वमीमांसा सिद्धांत का ही तार्किक परिणाम है। स्पिनोजा असत्यता और अज्ञान में भेद करता है। स्पिनोजा के अनुसार, अनुसार प्रत्यय वे हैं, जिनमें ज्ञान की पूर्णता का अभाव होता है। उसके अनुसार केवल बाह्य कसौटियों के आधार पर सत्यता और असत्यता में भेद नही किया जा सकता है।

स्पिनोजा ने निश्चितता को भी सत्यता की आन्तरिक कसौटी के रूप में स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त संवादिता को सत्यता की बाह्य कसौटी माना गया है। संवाद से तात्पर्य प्रत्यय का वस्तु के अनुरूप होना है।

स्पष्टता, विवेकपूर्णता और निश्चितता तीनों संयुक्त रूप से सत्यता की पर्याप्त कसौटियाँ है।

Teacher's Signature

ज्ञान प्रक्रिया के स्तर —

स्पिनोजा के ज्ञान की तीन अवस्थाओं का उल्लेख अपने नीतिशास्त्र में किया है, जो निम्नलिखित हैं —

काल्पनिक ज्ञान —

इसके अन्तर्गत इन्द्रियानुभव एवं लोकपरम्पराओं पर आधारित ज्ञान आते हैं, जैसे- इन्द्रिय प्रत्यक्ष से उत्पन्न ज्ञान, जनश्रुति। यह ज्ञान निम्न स्तर का ज्ञान है, क्योंकि यह इन्द्रियों पर आधारित है।

बौद्धिक ज्ञान —

यह ज्ञान काल्पनिक ज्ञान से उच्च स्तर का है। यह तर्कजन्य ज्ञान है। इस स्तर पर हम वस्तुओं के बाह्य आपसी सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसे वैज्ञानिक ज्ञान भी कहते हैं। इस स्तर पर मनुष्य वस्तुओं एवं मनुष्यों में व्याप्त ईश्वर के कुछ गुणों को जान पाता है। यह ईश्वर के विश्वात्म रूप का ज्ञान है। इसके अन्तर्गत सामान्य तत्वों और निगमन से प्राप्त ज्ञान आता है। यह वस्तुओं के सर्वगत लक्षणों का ज्ञान है।

Teacher's Signature

प्रज्ञात्मक ज्ञान — यह ज्ञान सर्वोच्च प्रकार का ज्ञान है। यह आत्मा के नित्य अंश पर आधारित ज्ञान है। यह नित्य एवं अनन्त तत्व की साक्षात अनुभूति है। यह स्वयं सिद्ध ज्ञान है। यह ज्ञान बुद्धि में ही उत्पन्न होता है, क्योंकि मानव बुद्धि ईश्वर की अनन्त बुद्धि का एक अंश है।

प्रतिभा ज्ञान अनुमानजन्य न होकर साक्षात होता है। यह स्पिनोजा की धार्मिक और रहस्यात्मक अनुभूतियों की दार्शनिक अभिव्यक्ति है। इस ज्ञान की प्राप्ति के परिणामस्वरूप मनुष्य स्वयं पूर्ण एवं आनन्दमय हो जाता है। इस ज्ञान से युक्त होने पर मनुष्य का दैवीकरण हो जाता है। वह दिव्य दृष्टि से अलौकिक हो जाता है। वह आनन्दमय हो जाता है।

Teacher's Signature